''मरंग गोडा नीलकंठ हुआ'' उपन्यास में विस्थापन तथा प्रदुषण विमर्श''

प्रोफेसर डॉ. साताप्पा शामराव सावंत
अध्यक्ष, हिंदी विभाग.
विलिंग्डन महाविद्यालय, सांगली.

सारांश:

उपन्यास में विवेचित पात्र सगेन पढ़ाई के दौरान झारखंड आंदोलन से जुड गया है। अपनी शिक्षा पूरी करने के पश्चात् वह जादूगोंडा में 'बेरोजगार विस्थापित संघ' की स्थापना करके आदिवासियों के हक अधिकार के प्रति अभियान चलाता है। वह एक सेमिनार मे परमाणु संयंत्रो तथा परमाणु बमों के संहारकता तथा विकीकरण की समस्या पर चिंता प्रकट करता है। परमाणु उर्जा कंपनी की नौकरी के प्रशिक्षण के दौरान संगेन भी पुरे नियम विकीकरण, अल्फा, बिटा, गामा, किरणें और उतकों को भेदने की क्षमता की गहन जानकारी प्राप्त करता है। जॉन नामक पात्र के साथ सगेन कुछ डॉक्टर मित्रो की सहायता से मरंगगोडा के आसपास गांव टोलो में स्वास्थ सर्वेक्षण करवाते हैं। परिणाम के आधार पर लडाई आगे बढती है। लडाई को और तेज और प्रभावी बनाने हेतु आंदोलनों पर डॉक्युमेंटरी फिल्म बनाने वाले आदित्य श्री को मरंगगोड मे आमंत्रित कर ''बुध्दा विपस इन जादूगोंडा'' बनाई जाती है। वे इस डॉक्युमेंटरी को अंतरराष्ट्रीय मंचों कार्यक्रमों में प्रदर्शित करके विकीरण के विरोध जनमत तयार किया जाता है।

बीज शब्द : प्रदुषण, विस्थापन, आदिवासी।

हिंदी उपन्यास साहित्य में आदिवासी उपन्यास साहित्य का अपना अलग स्थान रहा है। हिंदी आदिवासी उपन्यास साहित्य धारा में आदिवासी जनजीवन के विविध आयामों पर बेबाकी के साथ प्रकाश डाला गया हैं। इस श्रृंखला में मनमोहन पाठक, वीरेंद्र जैन, संजीव प्रकाश मिश्र, मैत्रेयी पुष्पा, मधुकर सिंह, राकेश कुमार सिहं, मंगल सिंह मुंज, शरद सिंह रामनाथ शिवेंद्र, रणेंद्र, महुआ मांझी आदि उपन्यासकारों के उपन्यासों का योगदान रहा हैं। महुआ माझी द्वारा लिखित ''मरंग गोडा नीलकंठ हुआ'' उपन्यास में चित्रित विस्थापन तथा प्रदुषण विमर्श पर प्रकाश डाला जा रहा हैं।

''मरंग गोडा नीलकंठ हुआ'' उपन्यास में विस्थापन तथा प्रदुषण विमर्श''

विवेचन उपन्यास जून, 2012 ई में राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली की ओर सें प्रकाशित हुआ हैं। विस्थापन - प्रदुषण और विकीरण से प्रभावित संघर्ष करनेवाले - आदिवासी समुदाय पर लिखा प्रथम उपन्यास रहा हैं। विवेच्य उपन्यास आदिवासी - जीवन की बारीकियों के साथ जंगल जीवन के यथार्थ तथ्यों का प्रभावी चित्रण प्रस्तुत करता हैं। प्रस्तुत उपन्यास में झारखंड राज्य के सिंहभूम इलाका चित्रण केंद्र स्थान पर हैं। जहॉपर युरेनियम की खदानें हैं। जहॉपर रेडियों धर्मि का प्रकोप सतत जारी रहा हैं।

इसी इलाके में अपने ढंग का बिलकुल अलग ढंग का अनोखा सारडा का घना जंगल भी हैं। जहॉ सात सौं पहाडों तथा उसके पठारों एवं मैदानी इलाकों में व्याप्त हैं। प्रस्तुत इलाका आदिम प्रकृति, ताजगी मूल्यवान खनिजों और साल वृक्षों के लिए मशहूर हैं। लेकिन कुदरत की यह सौगात आदिवासी जनजीवन के लिए शाप का खतरा बन गया हैं। विशेष रुप से स्वाधीनता के पश्चात सारंडा के जंगल का विनाश लगातर जारी हैं। इस विनाश का सीधा संबंध सरकार की उपभोक्तावादी नीति के साथ जोडा जाता हैं। जिसकी वजह से आदिवासियों की जैव संसाधनों को विनाश किया जा रहा हैं।

महुआ माजी ने विवेचन उपन्यास में भारत के झारखंड राज्य के सिहंभूम के आदिवासियों तक इसे सीमित नहीं रखा। यह उपन्यास जापान, ऑस्ट्रोलिया और विश्व के विभिन्न खंडो में निवास, आश्रम बनानेवाले आदिवासी समुदाय के साथ सीधा जुड जाता हैं। इसी परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत उपन्यास अपने परिसर तथा जन जीवन की सक्ती विशेषताओं के कारण अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करनेवाला उपन्यास कहा जा सकता हैं। प्रसिध्द आलोचक वीरेंद्र जैन ने विवेचन उपन्यास के बारे में अपना मत प्रतिपादित करते हुए लिखा हैं। महुआ माजी का उपन्यास ''मरंग गोडा नीलकंठ हुआ'' अपने नए विषय में एक उल्लेखनीय पहलकदमी है। जब हिंदी की मुख्यधारा के लेखक हाशि के समाज को लेकर विभाग उदासीन हो तब आदिवासियों की दुर्दुभ और जीवन संघर्ष पर केंद्रित यह उपन्यास बडी रिक्तता की भरपाई हैं। इस उपन्यास में महुआ माजी युरेनियम की तलाश से जुडी जिस संपूर्ण प्रक्रिया को उजागर करती हैं। वह हिंदी उपन्यास का जोखिम के इलाके में प्रवेश है। महुआ माजी ने गहरें शोध, सर्वेक्षण और समाजशास्त्रीय दृष्टि का सहारा लेकर इस उपन्यास के माध्यम सें जरुरी हस्तक्षेप किया हैं।'' 1

लेखिका महुआ माजी के विचारों में स्वतंत्र भारत के स्वतंत्रता के पश्चात सरकार की विकास योजनाओं के चलते अपने हो जमीन तथा जंगल से विस्थापित होने आदिवासियों की पीडा को प्रभावी वाणी में अभिव्यक्ति दी हैं। विकास तथा विस्थापन का दौर केवल झारखंड ही नहीं बल्कि जहां भी खनिज संपदा की उपलब्धता देखी गई वहॉ पर खेल खेला गया। सन 1973 ई. में सरकार ने केंद्र पता व्यवसाय को राष्ट्रपति कृत घोषित कर दिया। इस नीति के फलस्वरुप आदिवासियों से रोजगार छीना गया,

उसके बाद सन 1976 ई में बिहार सरकार ने विश्व बैंक के सहयोग ‘‘वन विकास निगम’’ की स्थापना की जिसके कारण वनों को राष्ट्रीय संपत्ति घोषित कर दिया। इन्हीं वनों पर आदिवासियों का जीवन आश्रित है। जंगलों के समस्त वृक्षों को काटकर वहॉ व्यावसायिक दृष्टिकोन से ज्यादा लाभदायक तथा जल्द बढ़नेवाले सागवान, युकलिप्टस आदि वृक्षों को रोपा गया। इन पेडों से आदिवासियों को न तो कोई सांस्कृतिक जुडाव था और नहीं कोई आर्थिक लाभ रोजमर्रा को सामान्य चीजों से भी आदिवासियों वंचित कर दिया गया। साथ ही कोयला, लोह, अयस्क, तांबा, युरेनियम जैसे खनिजों के लिए आदिवासियों जंगलों से विस्थापित भी किया गया। प्रस्तुत उपन्यास में एक आदिवासी पान के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति प्रस्तुत करते हुए लिखा गया है - ‘‘जंगल के बिना हम जिएॅंगे कैसे? हमारी झोपड़ी खटिया बनाने की लकडी और रस्सन्न जंगल से आती है। ..... जब धन नहीं होता तब जंगली फल, मूल कंद आदि खाकर ही तो हम अपना पेट भरते है। लोह, तसर,गुटी, करंज के बीज, दोना पत्तल आदि बेचकर चावल नमक इत्यादी खरीदते हैं..... साल भर की लकड़ी और पत्तों के बिना शादी ब्याह से लेकर जन्म मृत्यु तक का कोई भी संस्कार संभव हैं क्या? ..... जंगल में घूसने नहीं दिया तो हम अपने पशुओं को चराएगें कहॉ? खेत के चारों और बाड़ा लगाने हेतु टहनियॉ कहॉ से लाएॅंगे? हल, कुदाल, कुल्हाडी या हंसुआ जैसी खेती के औजारों से प्रयुक्त होनेवाली लकडियों का जुगाड कहॉ से करेंगे? सूप, टोकरा या चटाई कैसे बुनेगें। डियंग बनाने का रानु और बीमारों को ठीक करने की जडी बुटियॉ भी तो जंगल से आती है। ... बच्चे जंगल से आते जाते हैं। 2

लेखिका ने विवेचन उपन्यास में विकास तथा विस्थापन की चर्चा पर प्रकाश डालते हुए उसे विकीरण की समस्याओं और उसके परिणामों तक पहुंचाने की कोशिश की है। परमाणु ऊर्जा संपन्न स्थापित किए गए हैं। इन खदानों तथा परमाणु ऊर्जा संयंत्रो और उसके कचरे से होनेवाला विकीरण बहुत ही गंभीर और जानलेवा समस्या है। आज भारत मे ही नहीं बल्कि पुरी दुनिया मे ऐसी कई युरेनियम खदाने तथा परमाणु भट्टियॉ विकास के नाम पर स्थापित हुई है, कई स्थानों पर इसका काम भी चल रहा है, किंतु इन भट्टियों से निकलनेवाला परमाणु कचरा बेहद गंभीर खतरा बन बया है। परमाणु भट्टियों और उसके कचरे की चपेट में दुनिया के अलग अलग प्रदेश आ गए हैं। इस तरह विकीरण की चर्चा के परिप्रेक्ष्य में यह उपन्यास वैश्विक बन गया है।

प्रस्तुत उपन्यास में आदिवासी इलाखों में पर्यावरण का प्रभावी अंकन हुआ है। युरेनियम खनन, नाभिकीय उर्जा उत्पादन, विकीरणयुक्त कचरा तथा आदिवासी इलाको में डंम्पिंग ये युरेनियम विकीरण से प्रभावित व्याधि, रोगों के प्रति पाठक, सरकार का ध्यान आकर्षित करना लेखिका का उदेश्य रहा हैं। परमाणु संयत्रों तथा परमाणु कचरे के चलते धीमी गति से कई पीढियों का संहार हो रहा है। प्रस्तुत उपन्यास में विवेचित सगेन तीन पीढ़ियों के संहार का गवाह है। परमाणु उर्जा विभाग द्वारा नियंत्रित युसी आई एल विभाग बिना सुरक्षात्मक उपाय मसलन दस्ताने, विशेष ड्रेस आदि के बगैर खनिको को युरेनियम की खदानो में उतारता है। युरेनियम की पीली धूल खनिकों के कपडों जुतों पर पूत जाती है। इस धूल को को बेपरवाह गैर जानकर खनिकों के कपडों और जुतांे पर पूत जाती है। इस धूल को बेपरवाह गैर जानकर खनिक अपने घर ले जाता है। मजदूरों की पत्नियॉ युरेनियम धूल भरे कपड़ों को नंगे हाथों से धोती है, जिसके परिणाम स्वरुप कैंसर जैसी जानलेवा मृत्यु शिकार आदिवासी बन रहे हैं। युरेनियम विकीकरण प्रभाव चित्रण प्रस्तुत करते हुए लेखिका ने लिखा है- ‘‘हैरानी होती है कि आखिर मरंग गोडा में ही क्यों रही है ऐसी बीमारियॉ? ... पडोसी जनमजय के बेटे का सिर अस्वाभाविक रुप से बड़ दिखा तो ---- तेतरी की बेटा भी लगभग वहीं हालत थी। फर्क सिर्फ इतना था कि सिर धड की तुलना मे बहुत छोटा था। निरंतर लंबे होते जा रहे थे। उॅंकुरा के आठ साल के बेटे के सूखे हाथ पॉव बाकी देह हर वक्त बिस्तर से लंगी रहती’’3

उपन्यास में विवेचित पात्र सगेन पढ़ाई के दौरान झारखंड आंदोलन से जुड गया है। अपनी शिक्षा पूरी करने के पश्चात् वह जादूगोंडा में ‘बेरोजगार विस्थापित संघ’ की स्थापना करके आदिवासियों के हक अधिकार के प्रति अभियान चलाता है। वह एक सेमिनार मे परमाणु संयंत्रो तथा परमाणु बमों के संहारकता तथा विकीकरण की समस्या पर चिंता प्रकट करता है। परमाणु उर्जा कंपनी की नौकरी के प्रशिक्षण के दौरान संगेन भी पुरे नियम विकीकरण, अल्फा, बिटा, गामा, किरणें और उतकों को भेदने की क्षमता की गहन जानकारी प्राप्त करता है। जॉन नामक पात्र के साथ सगेन कुछ डॉक्टर मित्रो की सहायता से मरंगगोडा के आसपास गांव टोलो में स्वास्थ सर्वेक्षण करवाते हैं। परिणाम के आधार पर लडाई आगे बढती है। लडाई को और तेज और प्रभावी बनाने हेतु आंदोलनों पर डॉक्युमेंटरी फिल्म बनाने वाले आदित्य श्री को मरंगगोड मे आमंत्रित कर ‘‘बुध्दा विपस इन जादूगोंडा’’ बनाई जाती है। वे इस डॉक्युमेंटरी को अंतरराष्ट्रीय मंचों कार्यक्रमों में प्रदर्शित करके विकीरण के विरोध जनमत तयार किया जाता है।

विकीरण की भयावहता का अंदाज इस बात से लगाया जा सकता है कि यदि परमाणु उर्जा संयंत्र दुर्घटना से फट जाता है, तो उसके परिणाम कितने गंभीर हो सकते है, इसका अनुभव अमेरिका और रुस के परमाणु संयंत्र के फटने से दुनिया को हुआ है। विशेष उल्लेखनीय बात यह है की, चेरनोबिल हादसे से संयंत्र में मौजूद 190 टन युरेनियम के चार प्रतिशत से भी कम विघटित तत्व रियेक्टर के बाहर निकले थे। लेखिका युरेनियम की दाहता पर प्रकाश डालते हुई लिखती है - ‘‘परमाणु संयंत्रों में एक हजार मेगा वैट

बिजली पैदा करने से करीब 27 किलोग्राम रेडिओ धर्मी कचरा उत्पन्न होता है और उसे निष्क्रिय होने मे एक लाख साल लग जाते है''। 4

उपन्यास के अंत में सगेन लागुरी माओर (मरंगगोडाज ऑर्गनाइझेशन अगनेस्ट रेडिएशन)की स्थापना करता है - जिसके द्वारा तमाम दुनिया में युरेनियम रेडिएशन के खतरे और उसके कुप्रभाव से धरती के तापमान में होनेवाले असंतुलन और उसके दुष्परिणाम की चर्चा की गई है। विकास की ऑधी दौड में पर्यावरण और धरती के अपरिमित दोहन को रोकने की कामना उपन्यास के अंत में की गई है।

उपसंहार

महुआ मांजी द्वारा लिखित ''मरंग गोडा नील कंठ'' उपन्यास मे विस्थापन तथा प्रदुषण विमर्श का अध्ययन करनेपर प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार है - भले ही प्रस्तुत उपन्यास आदिवासी जनजीवन पर लिखा गया है। लेकिन यह रचना अपनी परिधि मे देश और दुनिया को अपने में समेटती दिखाई देती है। यथार्थ में यह वैश्विक उपन्यास है।

यह उपन्यास कथित विकास के छलावे भ्रम का पर्दाफाश कर देता है। प्रस्तुत उपन्यास मे वन, वन और खनिज संपदा का अपरिमित दोहन, विस्थापन, युरेनियम विकीरण, परमाणु अस्त्रों, आण्विक उर्जा के दुष्परिणाम, वैश्विक ताप वृध्दि जैसी गंभीर समस्याओं से अवगत करात है।

संदर्भस्त्रोत

1. महुआ मांजी - मरंग गोडा नीलकंठ हुआ -प्रस्तावना वीरेद्र जैन प्र.- 10
2. महुआ मांजी - मरंग गोडा नीलकंठ हुआ प्र. 5
3. महुआ मांजी - मरंग गोडा नीलकंठ हुआ प्र. 120
4. महुआ मांजी - मरंग गोडा नीलकंठ हुआ प्र. 380